National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2015; 1(3): 46-49
© 2015 NJHSR
www.sanskritarticle.com

**डॉ. हनुमत लाल मीना**
हिन्दी विभाग,श्याम लाल कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

**Correspondence:**
**डॉ. हनुमत लाल मीना**
हिन्दी विभाग,श्याम लाल कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय,नई दिल्ली

# मातृभूमिः स्त्री की अनुपस्थिति में विकृत सामाजिक संरचना

**डॉ. हनुमत लाल मीना**

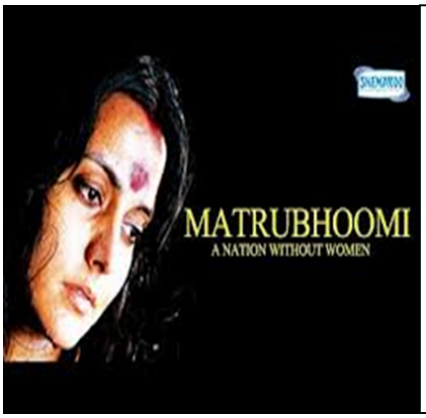


हिन्दी सिनेमा में स्त्री को केन्द्र में रखकर अनेक फिल्मों का निर्माण हुआ है जिनमें स्त्री जीवन का चित्रण किया गया है। इसी कड़ी में 2003 में आई हिन्दी फिल्म 'मातृभूमिः अ नेशन विदाऊट वुमन' है। जो की 2 करोड़ के मामूली बजट में बनने के बाबजूद एक चर्चित फिल्म है। इस फिल्म के डायरेक्टर मनीष झा के अनुसार- 'मैनें मेरे बचपन में देखा था कि किस तरह मेरी माँ ने एक दुःखद जीवन व्यतीत किया। मेरी माँ ही नहीं बल्कि आस-पड़ोस में रहने वाली मध्यवर्गीय महिलाओं की स्थिति बहुत खराब थी। उनके आर्थिक, मानसिक, शारीरिक शोषण के लिए वह समाज जिम्मेदार था। इसी के चलते मैनें 'मातृभूमि' फिल्म बनाई।

मातृभूमि फिल्म एक ऐसी सच्चाई को प्रकट करती है जो कि हमारे सामने घटित हो रही है। इस फिल्म में दिखाया गया है कि पुत्र लोभ के कारण किस तरह नवजात लड़कियों की हत्या की जा रही है और इसकी परिणति क्या हो सकती है। यह फिल्म नारी-शोषण, लिंग भेद, भ्रूण हत्या एवं कन्या वध की समस्या को उठाती है साथ ही इसके लिए जिम्मेदार कारणों को भी दर्शाती है। फिल्म का शीर्षक 'मातृभूमि' अपने आप में ही एक संरचना को प्रकट करता है। भूमि को माता का दर्जा देने का कारण उर्वरता है क्योंकि भूमि अनाज पैदा करती है। वहीं एक स्त्री की भी भूमिका संतानोत्पत्ति में महत्वपूर्ण है। लेकिन अब यह भूमि बंजर होती जा रही है। अर्थात स्त्रियों की संख्या घटती जा रही है जिसका कारण पितृसत्ता है। फिल्म के प्रथम दृश्य में एक गांव को दिखाया गया है जहां पर एक स्त्री मां बनने जा रही है तथा दर्द से छटपटा रही है। घर के बाहर उसका पति चिन्तित है वह भगवान से पुत्र प्राप्ति की कामना कर रहा है। जब बच्चे के रोने की आवाज आती है तो सभी लोग खुशी मनाते हैं लेकिन जब उन्हें पता चलता है कि लड़की पैदा हुई है तो मातम छा जाता है। तथा एक सामाजिक समारोह में नवजात लड़की को उसका पिता दूध से भरे हुए लोहे के बर्तन में डुबोकर मार देता है तथा अगली बार पुत्र की कामना करता है।

**सदियों से समाज ने आर्थिक स्वार्थ के कारण नवजात बालिका को पैदा होते ही खत्म करना अच्छा सोचा, लेकिन यह न सोचा कि एक दिन यह हल अपने आप में एक समस्या बन जायेगा।**

इस दृश्य में एक ऐसी संरचना का निर्माण हुआ है जो दर्शाती है कि जिस गांव में लड़कियों को जन्म लेते ही मार दिया जाता है तथा जन्म देने वाली मां जो उसे नौ महीने अपने पेट में रखती है और दर्द सहती है उसकी भावना की भी हत्या कर दी जाती है। वहीं दूसरी तरफ उस नवजात बालिका को मारने के लिए एक समारोह का आयोजन किया जाता है जिसमें अनुष्ठान किया जाता है। उसी अनुष्ठान में लड़की को मारा जाता है तथा अगले वर्ष पुत्र-प्राप्ति की कामना की जाती है। दूध से भरा हुआ बर्तन भी एक संरचना को दर्शाता है। अर्थात उस गांव में दूध प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है इसलिए लड़की को मारने के लिए दूध में डुबोया जाता है जबकि उसे पानी में डुबोकर भी मारा जा सकता था। लेकिन दूध की प्रचूर मात्रा यह संकेत देती है कि गांव की आर्थिक स्थिति अच्छी है। इसी दृश्य में नवजात बालिका की हत्या एक विकराल समस्या की ओर भी संकेत करती है।

तीस साल बाद उसी गांव का दृश्य। गांव के एक सम्पन्न परिवार का दृश्य जिसके अन्दर कुछ वार्तालाप हो रहा है:

**रामचरण-** एक भी लड़की नहीं बची, दस-बारह साल की होगी तो भी चलेगी।

**पण्डित जगन्नाथ-** अरे रामचरण हम तुमसे बोल रहे है ना दस-बारह साल की छोड़, अस्सी साल की बुढ़िया तक नहीं बची। बहुत कोशिश करके देख ली, खूब भागदौड़ करके देख ली पर कोई फायदा नहीं।

इस दृश्य का वार्तालाप हमें यह संकेत देता है कि गांव में लड़की का न होना एक समस्या बन चुकी हैं जिसकी जिम्मेदार पहले की गई नवजात बालिका हत्या है। इससे पता चलता है कि धीरे-धीरे यह समस्या विकराल रूप धारण करती जा रही है। यह हमारे देश के घटते लिंगानुपात की और भी ध्यान आकृष्ट करती है।

हमारे देश में 1901 के बाद प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या चार अपवाद वर्षो को छोड़कर, गिरती गयी है, जो निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है:

| **वर्ष** | **लिंगानुपात** | **वर्ष** | **लिंगानुपात** |
|---|---|---|---|
| **1901** | **972** | **1961** | **941** |
| **1911** | **964** | **1971** | **930** |
| **1921** | **955** | **1981** | **934** |
| **1931** | **950** | **1991** | **927** |
| **1941** | **945** | **2001** | **933** |
| **1951** | **946** | **2011** | **943** |

जनगणना 2011 के अनुसार उत्तर प्रदेश के कुछ शहरों में प्रति 1000 पुरूषों के पीछे स्त्रियों की संख्या के कुछ उदाहरण-

| | |
|---|---|
| आगरा | **868** |
| इटावा | **870** |
| बदायूँ | **871** |
| मथुरा | **863** |

**राष्ट्रीय राजधनी क्षेत्र दिल्ली** की स्थिति इस तरह है:

| | |
|---|---|
| उत्तर पश्चिम दिल्ली | **865** |
| नई दिल्ली | **822** |
| दक्षिण पश्चिम दिल्ली | **840** |

**मध्यप्रदेश** की स्थिति इस तरह है:

| | |
|---|---|
| भिंड | **837** |
| ग्वालियर | **864** |
| गुना | **912** |
| भोपाल | **918** |

**राजस्थान** राज्य की स्थिति इस तरह है:

| | |
|---|---|
| गंगानगर | **887** |
| अलवर | **895** |
| करौली | **861** |
| जैसलमेर | **8521** |

1901 से आज तक पुरूषों के अनुपात के रूप में महिलाओं की संख्या घटती ही आ रही है। आज आधुनिक तकनीकों से भी उलटे इसे प्रोत्साहन ही मिल रहा है।

फिल्म के एक अन्य दृश्य में राकेश जो कि स्कूल में शिक्षक है को अपनी शादी के बारें में चिन्तित मुद्रा में दिखाया गया है। वह कक्षा के अन्दर भी चुपचाप अपनी शादी के होने न होने के संशय में खोया रहता है तथा कक्षा के छात्र नाचते-गाते रहते है। तभी अचानक उसका मित्र पप्पू वहां आता है।

**पप्पू-** राकेश, राकेश उठ यार

**राकेश-** अरे पप्पू!

**पप्पू-** मेरी शादी तय हो गई

**राकेश-** शादी!

**पप्पू-** हाँ आखिर पिताजी ने ढूंढ ही निकाली लड़की। अरे चैदह साल की अप्सरा है यार, लेकिन हाँ तुम लोगों को शादी में आना जरूर है वरना हम फेरे नहीं लेगें, अगले मंगलवार को शादी हैं। अरे गांव में पिछले पन्द्रह सालों में पहली शादी है यार!

**राकेश छात्र से-** अरे तुम यहां आओं, हां तुम, यहां आओ यहां, नौटंकी करता है। क्लास में, नौटंकी करता है ;मारता है इधर आओ।

**छात्र**- नहीं सर

**राकेश-** हाँ भई पप्पू बधाई हो जरूर आएँगें तुम्हारी शादी में

**पप्पू-** अरे ऐसे थोड़े ही गले मिलो ,गले नहीं मिलता

**राकेश-** हाँ ठीक है, ठीक है, बिल्कुल आएँग।

इस दृश्य में राकेश एक ऐसे युवक का प्रतीक है जो कि अपनी शादी के लिए परेशान रहता है। वह यहां पर गांव के सारे युवाओं का प्रतीक है जो कि अपनी शादी के होने की स्थिति पर चिंतित है। वहीं पप्पू की शादी की खबर से राकेश को एक धक्का सा लगता है। वह खुश होने की बजाए गुस्से से लाल हो जाता है तथा अपना गुस्सा क्लास के एक छात्र पर निकालता हैं। इस गुस्से का कारण शादी न होना तथा पप्पू की शादी की खबर है। तथा गांव में पिछले पन्द्रह सालों में पहली शादी होना दर्शाता है कि गांव में एक भी डोली पिछले पन्द्रह सालों से नहीं आई है। पप्पू द्वारा कही गई यह पंक्ति पिताजी ने ढूँढ ही निकाली लड़की, एक ऐसे समाज को दर्शाती है जहां लडकियों का अभाव है तथा ढूँढने से भी लड़की नहीं मिलती। लड़की का मिलना यहां पर एक बहुत बड़ी उपलब्धि हासिल करने जैसा है। तथा राकेश द्वारा पप्पू से गले न मिलना उसकी इष्या को दर्शाता है। अर्थात राकेश पप्पू की शादी की खबर से खुश न होकर अपने आप को दुःखी एवं अपमानित महसूस करता है। गांव में स्कूल का होना एक ऐसे गांव की संरचना को प्रकट करता है। जो कि शिक्षा के क्षेत्र में सम्पन्न है। स्कूल का दृश्य यह दर्शाता है कि गांव में शिक्षा का प्रचार-प्रसार है तथा उस गांव के लोग शिक्षा के प्रति जागरूक है। स्कूल में बच्चों की संख्या इसको स्पष्ट करती है।

जब पण्डित एक लड़की कालकी को जंगल में गुनगुनाते हुए सुनता है तो वह उसका पीछा करता है। लड़की कालकी भागकर सीढियों के द्वारा घर की चार दीवारी के अन्दर उतर जाती है। जबकि घर के बाहर ताला लगा हुआ है। पण्डित भी वहा आ जाता है तथा लड़की कालकी के पिता से बात करता है।

**पण्डित -** प्रताप जी आपकों 100 फीसदी यकीन है कि आपकी बेटी लड़की ही है।

**प्रताप-** कैसी बातें कर रहें हैं पण्डित जी

**पण्डित-** अरे नहीं हमकों यह समझ में नहीं आ रहा कि आपने अपनी हीरे जैसी लड़की को अभी तक क्यों छुपाकर रखा है।

**प्रताप-** छुपाके नहीं रखता तो आपको लगता है मेरी बेटी जिन्दा रह पाती, उसे भी बाकी लड़कियों की तरह पैदा होते ही मार दिया जाता।

**पण्डित-** अरे हम अभी की बात कर रहे है इस उम्र की।

**प्रताप-** इस उम्र में तो वैसे ही लोग उसे चील-कोऔं की तरह नोंच खाएँगे। मैं तो बस यही चाहता हूँ कि अच्छा सा घर, परिवार देखकर उसकी शादी कर दूँ।

**पण्डित-** अरे हीरा दिलवायेगें प्रताप जी हीरा, हम बता रहे हैं आपसे चिराग लेकर ढुँढोगें तो भी ना ऐसा लड़का, ना खानदान, ना ऐसा घर मिलेगा। आपको पता नहीं आपने क्या चीज छुपाकर रखी है। जितना मांगेगे उतना दिलवायेगें।

**प्रताप-** जितना भी

**पण्डित-** हाँ-हाँ

**प्रताप-** एक-एक

**पण्डित-** एक लाख, दिए

**प्रताप-** एक लाख

इस दृश्य में दिखाया गया है कि पण्डित प्रताप से पूछता है कि उसकी बेटी 100 फीसदी लड़की है। अर्थात इससे स्पष्ट होता है कि उस समाज में लड़की पर भी लड़की होने न होने का संशय था। अर्थात उस परिदृश्य से महिलाएं नदारद थीं। इसलिए पण्डित को विश्वास नहीं हो पाता कि कालकी लड़की ही है। तथा घर के बाहर से ताला होना एक दूसरी संरचना को प्रकट करता है। यह ताला संकेत करता है कि घर में कोई नहीं रहता। जबकि घर के ताला लगाने का मूल कारण कालकी को लोगों की नजरों से बचाकर रखना था। इसीलिए कालकी अपनी इफाजत के लिए पुरूष-वेश कुर्ता-पाजामा-टोपी पहन कर रहती है। वहीं कौओं की तरह नौचने से एक ऐसे समाज की संरचना बन रही है जहां जवान लड़की को देखते ही लोग उस पर भूखे भेड़िये की तरह टूट पड़ते हैं और अपनी वासना की पूर्ति के लिए हैवान बन जाते है। इसी दृश्य में दहेज की और भी संकेत है। प्रताप अपनी बेटी कालकी का एक तरह से सौदा करता है। पण्डित द्वारा कालकी को 'चीज' कहकर संबोधित करना एक प्रकार से नारी को निर्जीव वस्तु के समान मान कर चलना है। जिसका इच्छानुसार सौदा कर लिया जाता है। तभी तो कालकी का पिता धन के लोभ के कारण उसका विवाह रामचरण के पाँचों लड़कों के साथ तय कर देता है।
रामचरण और उसके पाँचों बेटों को विवाह होने के पश्चात शराब पीते हुए दिखाया गया है।

**राकेश-** नौकर से हे रघु कैलेन्डर लेकर आ।

पिताजी हम सब को यह शुभ-दिन दिखाने के लिए, हम सब की तरफ से ,गले मिलता है।
हम लोगों को तो लगा हम कवाँरे ही मर जाएंगें भाई ,तो भाई आज है महीने की पहली तारीख और महीना है दिसम्बर हमारी शादी का पहला दिन, हम लोग है पांच भाई और कालकी है एक, दिन तो डिवाइड करना ही पड़ेगा। बड़ा भाई होने के नाते समारोह का फीता में काटूगां। बृहस्पतिवार गया मेरे पास, शुक्रवार गया ब्रजेश को, शनिवार गया शैलेश को, रविवार लोकेश को और सोमवार सुरज को, बस। अब भई मुश्किल ये आ रही है कि सप्ताह के दो दिन अभी भी खाली है और हमने इतना पैसा दिया है कि ये नाइंसाफी होगी की उन्हें अकेला सोना पड़े।

**शैलेश-** बड़े भइया, बड़े होने के नाते दो दिन भी आप ही ले लीजिए।

**रामचरण पिता**- बेवफूकों अपने बाप के बारें में सोचा है कभी, तुम्हारी मां के मरने के बाद तुम्हारा बाप भी में था ओर मां भी। लेकिन तुम में जरा भी दया और जरा भी प्यार नहीं, बाप शाला मरे तो मरे। अरे मैने दिए है पांच लाख और पांच गाय, ताकि शालों तुम्हारी शादी हो सके और तुम...

इस दृश्य की संरचना एक प्रक्रिया के परिणाम को दर्शाती है। प्रक्रिया है - मादा भ्रूण हत्या, जिसके कारण गांव में कोई भी लड़की नहीं बची। इसीलिए इस दृश्य की संरचना में सम्बन्धों का ढांचा बिखर रहा है। परिवार में भाई-बहन, पिता-पुत्र, पति-पत्नि आदि को मानवीय सम्बन्धों के रूप में माना जाता है। लेकिन यहां पर रामचरण और उसके बेटे, साथ-साथ शराब पीते है। लेकिन इससे भी बढ़कर मानवीय सम्बन्ध वहां बिखरते और टूटते है जब रामचरण और उसके बेटे एक ही स्त्री कालकी के साथ संबंध बनाते है। जिसका कारण भी विषम लिंगानुपात है। वर्तमान में देखा जाय तो न्यूज चैनलों पर रोजाना ऐसी कई खबरे प्रसारित होती है जिसमें ससूर द्वारा अपनी बहू का बलात्कार किया जाता है। समाज के अन्दर ऐसी कई अमानवीय घटनाएं होती रहती है। जिसके मूल में पुरूषों की भोगवादी प्रवृत्ति तो निहीत है ही, साथ ही समाज में लिगांनुपात की समस्या भी ऐसी घटनाओं को जन्म देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आज भारतीय समाज में लगभग हर व्यक्ति पुत्र प्राप्ति की आकांक्षा लेकर चल रहा है जिसके चलते गर्भ में ही बालिकाओं का गला घोंट दिया जा रहा है। 'मातृभूमि' फिल्म के अंत में दर्शायी गई यह रिपोर्ट इसका साक्ष्य प्रस्तुत करती है।-

"स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय एवम न्छथ्च्। के अनुसार पुत्र लोभ के कारण पिछले सौ वर्षो में 350 लाख बालिकाएं भारत की जनसंख्या से लापता है।"